

समीप अ.क्रि. (तत्.) निकट, पास।

समीपता स्त्री. (तत्.) निकटता, सामीप्य।

समीपवर्ती वि. (तत्.) जो किसी के समीप या पास में स्थित हो, निकटस्थ।

समीपस्थ वि. (तत्.) जो समीप में स्थित हो, निकट का, समीपवर्ती।

समीभाव पुं. (तत्.) 1. साधारण अवस्था में होना 2. समता का भाव।

समीमत वि. (तत्.) 1. जिसके अंगों में आनुपातिक एकरूपता और सामंजस्य हो, संतुलित अवयवों वाला 2. सुडौल 3. सुंदर 4. सौष्ठवयुक्त।

समीय पुं. (देश.) 1. सदृश, समान 2. जिनका मूल एक सा हो 3. समान समझे जाने वाला 4. युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

समीर पुं. (तत्.) हवा, वायु, प्राण वायु पवन देव, शमी वृक्ष।

समीरण पुं. (तत्.) वायु पथिक, यात्री, पाँच की संख्या प्रेरण, प्रेषण वि. गतिशील करने वाला, उद्दीपक।

समीरित वि. (तत्.) चालित प्रेषित उच्चारित शब्द।

समीष्ट स्त्री. (तत्.) 1. समूह 2. सब अंगों/सदस्यों/व्यक्तियों/व्यष्टियों का सामूहिक रूप 2. समवेत सत्ता 3. एक जैसी वस्तुओं का समूह 4. समाज।

समीष्ट निगम पुं. (तत्.) ऐसा निगम जो समीष्ट या समुदाय पर आश्रित हो अथवा बहुतां के सहयोग से काम करता हो।

समीष्टवाद पुं. (तत्.) 1. उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व का सिद्धांत, समूहवाद 2. सहकारिता और केंद्रीय नियोजन पर आधारित एक प्रकार की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था।

समीष्ठल पुं. (तत्.) 1. कोकुआ नाम का एक कँटीला पौधा 2. गंडीर या गिंडिनी नाम का साग।

समीष्ठला स्त्री. (तत्.) 1. समीष्ठल 2. जमींकद, सूरन 3. गिंडिनी नाम का साग।

समीहा स्त्री. (तत्.) चेष्टा, उद्योग, प्रयत्न, इच्छा, अभिलाषा, कामना, जाँच, तलाश, अन्वेषण।

समीहित वि. (तत्.) इच्छित, अभिलषित पुं. इच्छा, प्रयत्न, चेष्टा।

समुंद पुं. (तद्.) समुद्र।

समुंदर पुं. (तद्.) समुद्र, सागर।

समुंदरपात पुं. (देश.) एक पौधा जिसके बीज दवा बनाने के काम आते हैं, समुंदर-सोख।

समुंदरफल पुं. (तद्.) 1. एक वृक्ष अथवा वृक्ष का फल, हिज्जल का वृक्ष 2. 'निचुल- नामक एक सदाबहार वृक्ष जो समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में पाया जाता है।

समुंदर फेन पुं. (तद्+तत्.) समुद्र की झाग।

समुंदर सोख पुं. (तद्.) एक पौधा जिसके बीज दवा बनाने के काम आते हैं, समुंदर पात।

समुक्त वि. (तत्.) जिसे कुछ कहा गया हो। जिसकी भर्त्सना की गई हो।

समुख वि. (तत्.) 1. वाक्कुशल, वाक्पटु, बोलने में चतुर 2. बातूनी, बहुत अधिक बोलने वाला।

समुचित वि. (तत्.) 1. उपयुक्त, उचित, ठीक, यथेष्ट, योग्य 2. पसंद आने वाला 3. जैसा होना चाहिए, वैसा।

समुच्चय पुं. (तत्.) 1. समूह, राशि, समाहार, ढेर 2. शब्दों अथवा वाक्यों का योग 3. कुछ वस्तुओं का एक साथ मिलना 4. एक काव्यालंकार जहाँ कई भावों का एक साथ ही प्रकट होना दिखलाया जाए अथवा जहाँ एक ही कार्य के लिए कई कारणों का विद्यमान रहना वर्णित किया जाए।

समुच्चयक वि. (तत्.) 1. समुच्चय संबंधी 2. समुच्चय के रूप में होने वाला।

समुच्चयन पुं. (तत्.) 1. ऊपर उठाने की क्रिया या भाव 2. इकट्ठा करने की क्रिया या भाव 3. समुच्चय-निर्माण।

समुच्चयबोधक पुं. (तत्.) व्या. व्याकरण में अव्यय का एक भेद जिसका कार्य दो शब्दों, दो